भारत भूमि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में मनाया 69 वां गणतंत्र दिवस

वर्धा, 26 जनवरी 2018; अंग्रेजों से कुछ कठिन परिस्थितियों में हमने भारत के वर्तमान को स्वीकार किया।

विभाजन और दर्द के साथ देश का निर्माण हुआ। आज हम ज्ञान-विज्ञान के साथ आर्थिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन हमारे समक्ष कुछ चुनौतियां भी हैं। उन चुनौतियों को सुलझाने के लिए हमें आत्मचिंतन की जरूरत है।

'सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम् स्यश्यामलां मातरम्' में पूरे देश की बात है। यह भारत भूमि हमारी जननी है, उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किए। वे 69 वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय में आयोजित ध्वजारोहण के उपरांत विश्वविद्यालय परिवार को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। इस अवसर पर समकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव क़ादर नवाज ख़ान उपस्थित थे। सर्वप्रथम कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने गांधी हिल जाकर गांधी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अभिवादन किया। इस दौरान उनके साथ उपस्थित समकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव क़ादर नवाज ख़ान, प्रो.मनोज कुमार, प्रो.नृपेंद्र प्रसाद मोदी आदि ने भी गांधी प्रतिमा पर पुष्प अर्पण कर अभिवादन किया।

ध्वजारोहण के उपरांत अपने उद्बोधन में कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि दुनिया में कई परिवर्तन हुए पर हम गणतंत्र की राह पर अडिग होकर चले आ रहे हैं। गणतंत्र लोग का तंत्र है और गणतंत्र के चलते गण की रक्षा जरूरी है। आज हम आर्थिक रूप से सबल हुए हैं। अब हम तीसरी दुनिया के देशों में नहीं बल्कि विकसित देशों के निकट आ रहे हैं। प्रो. मिश्र ने जनता के अतिरिक्त आर्थिक आकर्षण पर चिंता जताते हुए कहा कि अधिक धनसंचय की प्रवृत्ति के कारण सामाजिक मूल्यों में बदलाव आया है। जिसके कारण समा ज में काफ़ी उतार-चढ़ाव हो रहे हैं। आज आय बढ़ाने की होड़ लगी है। जिससे समाज में अमीर और गरीब के बीच की खाई गहरी हो रही है। अकादमिक क्षेत्र के विभिन्न अनुशासनों में स्थापित हो रहे नए प्रतिमानों को स्वीकारने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि अध्यापक की महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है, उन्हें अपने मानदंड स्थापित करने चाहिए। प्रो.मिश्र ने कहा कि अपनी संस्था का उत्कर्ष कैसा हो, संस्था कैसे आगे बढ़े, इस ओर हम सभी को समन्वित रूप से प्रयास करने की जरूरत है, क्योंकि संस्था से ही हमारी गरिमा बढ़ती है। हिंदी भाषा के विस्तार पर अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी साम्राज्यवादी भाषा नहीं अपितु लोकभाषा है। संपर्क भाषा के रूप में कैसे इसका अधिकाधिक उपयोग हो, कैसे तकनीकी दृष्टि से हिंदी समृद्ध हो सके, इस ओर हमारा ध्यान होना चाहिए। गणतंत्र

दिवस समारोह का मुख्य आकर्षण रहा-कुलपति को सुरक्षाकर्मियों द्वारा सलामी परेड किया जाना। सुरक्षा अधिकारी राजेंद्र घोड़मारे के मार्गदर्शन में मार्च पास्ट किया गया जिसका नेतृत्व प्लाटून कमांडर मनोज सिरनाथे तथा पलटन नायक रवींद्र पंचभाई और नितिन शेंडे ने किया। परेड में 56 सुरक्षाकर्मियों ने कुलपति प्रो.मिश्र को सलामी दी। समारोह का संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ राकेश मिश्र ने किया। ध्वजारोहण समारोह के उपरांत उपस्थित सभी को मिठाई का वितरण किया गया। गणतंत्र दिवस समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, शिक्षकेत्तर कर्मी सहित शोधार्थी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।